chapter-2

द्वितीय अध्याय

गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा - परिचय एवं वैशिष्ट्य

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय में यह स्पष्ट किया गया है कि ऐतिहासिक दृष्टि से भारत एक राष्ट्र है तथा हिन्दी आज उसकी परम्परा-प्राप्त राष्ट्रभाषा है, जो न केवल भारत के विभिन्न जनपदों में अन्त:प्रादेशिक भाषा के रूप में प्रारम्भ से ही स्वीकृत है, वरन् उसकी साहित्यिक परम्पराएं भी भारत के विभिन्न जनपदों में प्राय: उसी समय से मिलती हैं जब से इन जनपदों की क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य सृजन की परम्पराएं प्रारम्भ होती हैं। भारत के अन्य अहिन्दी भाषी प्रदेशों के समान ही गुजरात में भी हिन्दी में साहित्य-सृजन की परम्परा लगभग उसी समय से मिलने लगती है जब से गुजरात में गुजराती भाषा में साहित्य सृजन होने लगता है। हिन्दी की ये अखिल भारतीय साहित्यिक परम्पराएं हिन्दी के वर्तमान संविधान-स्वीकृत वैध राष्ट्रभाषा रूप की ऐतिहासिकता की प्रबल पुष्टि एवं प्रमाण मानी जा सकती हैं।

भारत के अन्य प्रान्तों की हिन्दी काव्य परम्पराओं के समान ही, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा तथा उसके अध्ययन का राष्ट्रीय महत्व है ही, साथ ही उसके विशेष रूप से समृद्ध होने के कारण उसका विशुद्ध साहित्यिक महत्व भी है। गुजरात की हिन्दी काव्य-परम्परा के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह भारत के अन्य अहिन्दी भाषी प्रदेशों की तुलना में अधिक विशाल एवं सुदीर्घ ही

नहीं अपितु वैविध्यपूर्ण भी है । आचार्य विनय मोहन शर्मा ने एक स्थान पर मराठी संतों की हिन्दी रचनाओं के विषय में लिखते हुए कहा है कि "समस्त भारतवर्ष में महाराष्ट्र ही ऐसा क्षेत्र है जहां अनेक संतों की मराठी के साथ साथ हिन्दी रचनाएं भी उपलब्ध होती हैं।[१] परन्तु आधुनिक शोधों के परिणाम स्वरूप सिद्ध हो चुका है कि महाराष्ट्र के अतिरिक्त अन्य अहिन्दी ,भाषी प्रदेशों में भी तत्त प्रान्तीय भाषाओं के साथ साथ हिन्दी रचनाएं उपलब्ध होती हैं, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा ने तो अपना ऐसा व्यक्तित्व भी विकसित कर लिया है जो एक ओर तो गुजरातेतर अन्य अहिन्दी भाषी प्रदेशों की हिन्दी काव्य परम्पराओं के समान, केवल सामान्य संत, वैष्णव कवियों की केवल धार्मिक-प्रयोजन - प्रेरित काव्य धारा नहीं है, तथा दूसरी ओर वह हिन्दी भाषी क्षेत्र की हिन्दी काव्य धाराओं के समान या पूर्णत: समानान्तर भी नहीं है । आशय यह कि\गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा विशेष परिस्थितियों में विकसित होने के कारण अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व विकसित कर सकी है जिसका हिन्दी की राष्ट्र व्यापी साहित्यिक परम्परा में विशेष महत्व है ।। अत: प्रस्तुत अध्याय में हिन्दी के राष्ट्रीय साहित्य की भूमिका पर भारत के एक प्रान्त की विशिष्ट हिन्दी काव्यधारा का अध्ययन समुचित प्रतीत होता है ।

गुजरात के हिन्दी साहित्य के व्यक्तित्व का अध्ययन करने से पूर्व यह बात विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि एक ही देश तथा काल में लिखा गया गुजराती साहित्य गुजरात में लिखे गये हिन्दी साहित्य से अनेक दृष्टियों से भिन्न है । आधुनिक काल के प्रारम्भ होने के पूर्व तथा समूचा गुजराती साहित्य प्रधानत: धार्मिक और लोकसाहित्य ही कहा जा सकता है । गुजराती के अनेक आधुनिक विद्वानों ने प्राचीन गुजराती साहित्य को काव्य गुण शून्य माना है,[२] श्री मणि शंकर भट्ट

१- हिन्दी को मराठी सन्तों की देन (भूमिका) - आचार्य विनयमोहन शर्मा, पृ० २ ।
२- जुनुं नर्म गद्य, पृ० ४६६ ।

के अनुसार प्राचीन गुजराती में बहुत ही अल्प सुकाव्य हैं[१]। कुछ विद्वानों ने प्राचीन गुजराती कवियों को कवि कहने की अपेक्षा 'भगत' कहना ही अधिक उचित माना है[२]। इसके विपरीत इसी समय गुजरात में लिखे हिन्दी साहित्य को हम भिन्न प्रकार का पाते हैं। धार्मिक तथा लोकरंजनात्मक साहित्य के अतिरिक्त हिन्दी में यहाँ शुद्ध साहित्य तथा शास्त्रीय साहित्य भी मिलता है। गुजरात में अनेक हिन्दी कवियों को राजाश्रय भी प्राप्त था जबकि किसी भी शुद्ध गुजराती कवि को राजाश्रय प्राप्त नहीं था। आशय यह कि गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का व्यक्तित्व, गुजरात की गुजराती काव्य परम्परा, गुजरातेतर अहिन्दी भाषी क्षेत्रों की हिन्दी काव्य परम्परा तथा हिन्दी भाषी प्रदेश की हिन्दी काव्य परम्पराओं से, अपने वैशिष्ट्य के कारण भिन्न है।

अत: प्रस्तुत अध्याय में गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के उद्भव और विकास के कारणों पर विचार कर उसका परिचय प्राप्त करेंगे। प्रस्तुत अध्याय का अध्ययन क्रम निम्नलिखित है :

१- गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के कारण - तथा गुजरात में हिन्दी।

२- गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का परिचय -
   १ : विश्लेषण और व्याख्या

३- गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का वैशिष्ट्य निरूपण

४- उपसंहार

१- पूर्वालाप (भूमिका) - राम नारायण पाठक द्वारा उद्धृत, पृ० ४४।

२- जयंती व्याख्यानो - आनन्द शंकर ध्रुव, पृ० २६२।

१। गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के कारण

जैसा कि पूर्व अध्याय के अध्ययन से स्पष्ट है कि भारत के प्राय: सभी प्रान्तों में हिन्दी की साहित्यिक परम्पराएं मिलती हैं परन्तु गुजरात में यह विशेष रूप से समृद्ध मिलती है। भारत के सभी प्रान्तों द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में सहज स्वीकृत कर लेना ही अहिन्दी भाषी प्रान्तों की हिन्दी काव्य परम्पराओं का प्रमुख कारण माना जा सकता है, परन्तु गुजरात में उसके विशेष रूप से समृद्ध होने के अनेक अन्य कारण भी हैं जिन पर यहां संक्षिप्ततः विचार कर लेना समीचीन होगा।

१।१ भौगोलिक स्थिति

"गुजरात एक दर्शन" के लेखक श्री शिव प्रसाद बी० राजगोर ने गुजरात की भौगोलिक - सीमाओं का वर्णन करते हुए लिखा है कि "गुजरात का समग्र विस्तार उष्ण कटिबन्ध में आया हुआ है। उसका दक्षिण उत्तर विस्तार २०'३ और २४'५ उत्तर अक्षांशों के बीच आता है। जबकि पूर्व पश्चिम विस्तार ६८'२ और ७४'४ पूर्व रेखांश के बीच आता है। कर्क वृत्त गुजरात के मध्य में पड़ता है।' गुजरात पश्चिम हिन्द के किनारे के उत्तर भाग में है, उसके उत्तर में मारवाड़, मेवाड़, सिरोही और कच्छ का मरुस्थल तथा अरावली गिरिमाला का आबू, आरासुर, तारंगा और साबरकांठा के पर्वत आते हैं। पूर्व में वांसवाड़ा, खानदेश, अलीराज पुर और भाबुआ तथा सह्याद्रि गिरिमाला है। पश्चिम की ओर अरबी समुद्र, खंभात की खाड़ी और कच्छ की खाड़ी हैं, पूर्व की सरहद पर सातपुड़ा और पश्चिम घाट की शाखाएं हैं। इस प्रकार उत्तर में मरू प्रदेश और पहाड़ों से, दक्षिण में और पूर्व में पहाड़ों और जंगलों से तथा पश्चिम की ओर से छिछले और अशान्त समुद्र से गुजरात आरक्षित है।[१] गुजरात प्रदेश की उक्त भौगोलिक सीमाओं पर

१- गुजरात एक दर्शन - शिवप्रसाद बी० राजगोर, पृ० १ ।

विचार करने से यह सहज ही स्पष्ट हो जाता है कि गुजरात के उत्तर और उत्तर पूर्वी सीमाओं को छोड़ कर अन्य सभी सीमाओं पर अधिक प्राकृतिक अवरोध हैं। परिणाम स्वरूप पश्चिमोत्तर में सिन्ध तथा दक्षिण पूर्व में महाराष्ट्र से मिले होने पर भी गुजरात सांस्कृतिक सामाजिक आदि दृष्टियों से हिन्दी भाषी प्रदेश राजस्थान तथा मालवा के अधिक निकट है। गुजरात तथा हिन्दी भाषी प्रदेश के बीच विशेष प्राकृतिक अवरोधों के न होने के कारण इन दोनों प्रदेशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान की परम्परा प्राचीन काल से ही मिलने लगती है। डा० धीरेन्द्र वर्मा का कथन है कि भौगोलिक दृष्टि से (उत्तर से) विन्ध्य के पार पहुंचने के लिए गुजरात प्रदेश सबसे अधिक सुगम है। इसीलिए बहुत प्राचीन काल से यह (गुजरात) मध्यदेश का उपनिवेश सा रहा है[१]। आशय यह कि गुजरात को मध्यदेशीय भाषा, साहित्य तथा संस्कृति के दक्षिण प्रवेश का सुगम मार्ग कहा जा सकता है। इसलिए गुजरात में मध्यदेशीय भाषा हिन्दी का प्रसार एवं उसमें साहित्य सृजन की परम्परा का प्रारम्भ अत्यन्त स्वाभाविक प्रतीत होता है।

१।२ राजनैतिक परिस्थिति

गुजरात अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण हिन्दी भाषी प्रदेश के साथ जो घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर सका था उसे उसकी राजनैतिक परिस्थितियों ने और भी दृढ़तर कर दिया। प्रागैतिहासिक काल से ही मध्यदेश से राजपूताना और गुजरात में शासकों के आगमन की अनेक कथाएं मिलने लगती हैं। इनमें सर्वप्रथम उल्लेख महाभारत के युद्ध के समय गुजरात में यादवों द्वारा द्वारका की स्थापना का मिलता है। जैन परम्परा के अनुसार गुजरात के प्रथम शासक चालुक्य वंशीय राजा थे जो गंगा दोआब के कन्नौज प्रदेश से आये थे[२]। यह निश्चित रूप से

१- ब्रजभाषा - डा० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० ३।

२- भारत का भाषा सर्वेक्षण - ग्रियर्सन (अनुवादक, उदय नारायण तिवारी), जिल्द १, भाग १, पृ० ३१५।

नहीं कहा जा सकता कि प्रागैतिहासिक काल में आनर्त, अनूप, सौराष्ट्र, कच्छ, अपरान्त आदि आधुनिक गुजरात राज्य के प्राचीन जनपद अविच्छिन्न रूप से सदा मध्यदेश या मध्यदेश के शासकों द्वारा शासित रहे हैं या नहीं, परन्तु इतना निश्चित है कि इस समय भी गुजरात मध्यदेश से ही सांस्कृतिक दृष्टि से सर्वाधिक प्रभावित रहा है[१]। ऐतिहासिक काल में चन्द्रगुप्त मौर्य से लेकर गुप्त साम्राज्य के अन्त तक गुजरात, मालवा और कभी कभी राजपूताने के साथ साथ, संयुक्त रूप से शासित होता रहा है[२]। इसके पश्चात् सन् ६४० तक गुजरात का बड़ा भाग कन्नौज द्वारा शासित होता रहा है[३]। आशय यह कि गुजरात अपने आधुनिक रूप को प्राप्त करने से पूर्व तक निरन्तर मध्यदेश के साथ एक राजनैतिक इकाई के रूप में बना रहा है। गुजरात का आधुनिक रूप सन् ६४२ में मूलराज द्वारा अनहिलवाड़ विजय के पश्चात ही अस्तित्व में आता है[४]। लेकिन इसके पश्चात भी सन् १०५० तक धार के परमार राजाओं ने गुजरात के अधिकांश भाग पर अपना अधिकार बनाये रखा था और इसके बाद भी सिद्धराज, कुमारपाल आदि गुजरात के शासकों ने मालवा और राजपूताने के कुछ भाग पर अपना अधिकार रख गुजरात और हिन्दी भाषी प्रदेश के राजनैतिक ऐक्य को अविच्छिन्न बनाये रखा[५]।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गुजरात में मुसलमानों के शासन के पूर्व तक राजनैतिक दृष्टि से गुजरात मालवा और राजपूताने के साथ एक प्रदेश के रूप में एक छत्र के नीचे शासित होता रहा है। यद्यपि मुसलमान काल में मालवा और राजपूताने के साथ गुजरात का सम्बन्ध कुछ भिन्न प्रकार का अवश्य हो जाता है परन्तु हिन्दी[६] प्रदेश से यहां व्यक्तियों और जातियों का आवागमन अब भी चलता रहता है।

१- Gujarat and its Literature - K.M.Munshi, p. 8.

२- Ibid, pp. 6, 7, 8.

३- Ibid, p. 120.

४- Ibid, p. 171.

५- Ibid, pp. 71-72,121.

६- Ibid, p. 122.

परिणामस्वरूप इस काल में राजनैतिक दृष्टि से गुजरात भिन्न इकाई अवश्य बन गया था, परन्तु सांस्कृतिक एवं भाषायी दृष्टि से गुजरात इस समय भी मेवाड़ मालवा तथा राजपुताने के साथ घुला मिला था और उज्जयिनी तथा मथुरा उसे सतत प्रभावित करती रही।[१] सारांश यह कि राजनैतिक दृष्टि से गुजरात हिन्दी भाषी प्रदेशों के साथ अत्यधिक निकट रहा है।[२] मुसलमान काल में भी सौराष्ट्र के सभी हिन्दू राजाओं ने अपना सम्बन्ध राजस्थान के राजपूतों के साथ किसी न किसी रूप में हमेशा बनाये रखा है। गुजरात के सभी मुसलमान शासक तो उत्तर भारत से ही आते थे। परिणाम स्वरूप न केवल मध्यदेश की भाषा इनके साथ गुजरात में आयी वरन् वहाँ की संस्कृति भी सहज ही गुजरात में व्याप्त होती रही।

गुजरात अपनी उक्त राजनैतिक परिस्थितियों के कारण भारत के अन्य प्रान्तों की अपेक्षा हिन्दी भाषी प्रान्तों के साथ अधिक निकट बना रहा है। इसलिए गुजरात में अन्य अहिन्दी भाषी क्षेत्रों की अपेक्षा हिन्दी काव्य परम्परा को विशेष रूप से विकसित होने का सुअवसर प्राप्त हो सका जो अनेक दृष्टियों से हिन्दी भाषी प्रदेश की हिन्दी काव्य परम्परा के अधिक निकट भी है।

१।३ सांस्कृतिक एकता

भौगोलिक दृष्टि से सुगम तथा राजनैतिक दृष्टि से सुदीर्घ काल तक हिन्दी भाषी प्रदेश के साथ एक इकाई के रूप में शासित होने के कारण गुजरात में एक ऐसी सांस्कृतिक परम्परा विकसित हो सकी है जो हिन्दी भाषी प्रदेश की सांस्कृतिक परम्परा के अत्यधिक निकट ही नहीं समान भी है। डा० धीरेन्द्र वर्मा के शब्दों में गंगा - यमुना के प्रदेश की संस्कृति का प्रत्यक्ष प्रवेश इस प्रदेश में दिखाई देता है।[३] जलवायु के भेद के कारण जो भेद दो भिन्न प्रदेशों में अनिवार्य हो

१- Gujarat and its Literature- K.M.Munshi, p. 126.

२- गुजरात नी अस्मिता, पृ० ३३।

३- ब्रजभाषा, पृ० ३ ।

जाते हैं, वे ही भेद गुजरात और हिन्दी भाषी प्रदेश के रहन सहन, खानपान तथा अन्य सांस्कृतिक क्रिया कलापों में दृष्टिगोचर होते हैं। आचरण व्यवहार, त्योहार, पर्व, शिक्षा दीक्षा, धार्मिक मान्यता आदि सभी बातों में गुजरात और हिन्दी भाषी प्रदेश विशेष रूप से समान है।[१] गुजरात तथा राजस्थान, मालवा आदि अन्य अनेक हिन्दी भाषी प्रदेशों में अनेक ऐसी समान जातियां हैं जिनमें आज भी वैवाहिक संबंध होते हैं। अनेक जातियां ऐसी हैं जिनका मूल हिन्दी भाषी प्रदेशों में ही है और जो समय समय पर गुजरात में आकर बस गयी हैं। इसी प्रकार अनेक गुजराती परिवार व्यापार आदि के कारण हिन्दी भाषी प्रदेशों में बस गये हैं। गुजरात के सभी प्रमुख धार्मिक सम्प्रदाय हिन्दी भाषी प्रदेश से आ कर गुजरात में प्रचलित हुए हैं। आज भी उनकी अनेक धार्मिक पीठिकाएं हिन्दी भाषी प्रदेशों में ही हैं जहां बड़ी संख्या में प्रति वर्ष गुजराती प्रजा तीर्थ यात्रा के लिए जाती रहती है और वहां से उनके धार्मिक आचार्य महन्त आदि गुजरात-भ्रमण के लिए आते रहते हैं। आशय यह कि गुजरात अनेक सामाजिक, धार्मिक, व्यापारिक तथा सांस्कृतिक कारणों से हिन्दी भाषी प्रदेशों के साथ निकट से सम्बद्ध है, परिणाम स्वरूप गुजरात और हिन्दी भाषी प्रदेश में किसी प्रकार सांस्कृतिक भेद नहीं देखा जा सकता। राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा बिहार में जो स्थानीय सांस्कृतिक भेद दृष्टिगोचर होता है वही भेद गुजरात की संस्कृति में है। अर्थात् गुजरात और हिन्दी भाषी प्रदेशों की सांस्कृतिक एकता के कारण गुजरात में हिन्दी भाषी प्रदेशों के समानान्तर हिन्दी की साहित्यिक परम्परा सहज ही विकसित हो सकी।

१.४ भाषायी समानता

भारत के मानचित्र में हिन्दी भाषी प्रदेश की स्थिति को ध्यान से देखने से स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी के मध्यवर्ती केन्द्र (खड़ी बोली और ब्रजभाषा

१- गुजरात की अस्मिता - के० एम० मुंशी, पृ० ३३।

प्रदेश) के चारो ओर आर्य भाषाओं के दो समान आवर्त वर्तमान हैं, प्रथम आवर्त उन बोलियों का है जिन्हें सामान्यत: हिन्दी की बोली या उपभाषा कहा जाता है।(उत्तर में पहाड़ी बोलियों का समूह, पूर्व में अवधी और बिहारी बोलियों का समूह, दक्षिण में बघेली, छत्तीसगढ़ी, निभाड़ी आदि बोलियों का समूह तथा पश्चिम में राजस्थान की बोलियों का समूह) । द्वितीय आवर्त में हिन्दी की समजात आर्य भाषाओं का समूह आता है।(उत्तर में कश्मीरी, नेपाली पूर्व में असामी, बंगाली, उड़ीया, दक्षिण में मराठी तथा पश्चिम में गुजराती पंजाबी आदि)[१] यद्यपि भारत की सभी भाषाएं अत्यधिक निकट हैं परन्तु भारत की आर्य भाषाओं में परस्पर यह समानता और भी अधिक है । भारतीय आर्य भाषाओं के उक्त द्वितीय आवर्त की भाषाओं में से केवल गुजराती ही एक ऐसी भाषा है जिसका हिन्दी के साथ साम्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है । इसी साम्य के कारण डा० ग्रीयर्सन ने अन्तरंग भाषा समूह के प्रदेश मध्यदेश के बाहर होते हुए भी गुजराती को अन्तरंग भाषा समूह के अन्तर्गत पश्चिमी हिन्दी के साथ परिगणित किया है । उनका कहना है कि गुजरात प्रदेश, वस्तुत: मध्यदेश स्थित मथुरा के लोगों द्वारा विजित किया गया था । भारतवर्ष का यही एक मात्र भाग है जिसमें हम आज भी बाहरी शाखा की प्राचीरों को नष्ट करने वाली भीतरी शाखा की भाषा का प्रसार पाते हैं।[३] डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने, यद्यपि डा० ग्रीयर्सन

१- तुलनीय है : जब भारतीय आर्य भाषाओं को किसी क्रम में रखना पड़ेगा तो सर्वप्रथम मध्यदेश की भाषा पश्चिमी हिन्दी को केन्द्र में रखना पड़ेगा । इसके चारों और कई मिश्रित भाषाओं का एक वृत्त है - इसके पूर्व में पूर्वी हिन्दी दक्षिण में गुजराती सहित राजस्थानी पश्चिम में पंजाबी तथा उत्तर में हिमालय की पहाड़ी भाषाएं हैं । ये सभी भाषाएं पश्चिमी हिन्दी तथा बाहरी उपशाखा की भाषाओं के बीच की भाषाएं हैं । और एक प्रकार से दोनों के बीच की कड़ी का काम करती हैं । इन मिश्रित भाषाओं के चारों ओर बाहर की तरफ हम बाहरी उपशाखा की भाषाओं का एक वृत्त पाते हैं । ये हैं बिहारी, उड़िया, मराठी, सिन्धी, लहंदा । - बड़ौदा जनगणना की रिपोर्ट- डा० सत्यव्रत मुखर्जी, सन् १९२१, पृ० २८६ ।

२- भारत का भाषा सर्वेक्षण-डा०ग्रीयर्सन(अनु०उदयनारायण तिवारी), जि०१,भा १, पृ०२२२।

३- वही, पृ० २३७ ।

Smt. HANSA MEHTA LIBRARY

द्वारा प्रस्तावित भारतीय आर्य भाषाओं का अंतरंग बहिरंग वर्गीकरण अमान्य रखा है तथापि गुजराती को राजस्थानी (जो हिन्दी की ही बोली है) के साथ पश्चिमी भाषा-समूह में ही स्वीकृत किया है।[१] राजस्थानी के विषय में लिखते हुए डा० धीरेन्द्र वर्मा ने कहा है कि गुजराती राजस्थानी के ही विकास की अंतिम सीढ़ी है जो मूलत: मध्यदेश की भाषा की एक शाखा है।[२] इसी प्रकार गुजराती के सुप्रसिद्ध वैयाकरण राय बहादुर श्री कमलाशंकर प्राणशंकर त्रिवेदी ने गुजराती को हिन्दी का पुराना प्रान्तिक रूप माना है।[३] ऐतिहासिक भाषा विज्ञान की दृष्टि से तो गुजराती और हिन्दी दोनों एक ही शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई मानी जाती हैं[४] साथ ही विवरणात्मक भाषा विज्ञान की दृष्टि से विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों भाषाओं के शब्द-समूह में ही नहीं वरन् इनके व्याकरणिक रूप विधान में भी अत्यधिक साम्य है। डा० सत्यव्रत मुखर्जी के शब्दों में राजस्थानी और गुजराती का व्याकरण मूलत: वही है जो पश्चिमी हिन्दी का है।[५]

आशय यह कि गुजराती भाषा अपने इतिहास और रूप दोनों की दृष्टियों से अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी के अत्यधिक निकट है। परिणाम स्वरूप गुजराती भाषी के लिए हिन्दी कभी एक समस्या नहीं बनी और हिन्दी साहित्य के गुजरात प्रवेश के द्वार सदैव खुले रहे हैं। इसीलिए अन्य प्रान्तों की अपेक्षा गुजरात में हिन्दी काव्य परम्परा विशेष रूप से विकसित हो सकी।

१- हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास - डा० उदय नारायण तिवारी, पृ० १७५।
२- हिन्दी भाषा का इतिहास - डा० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० ५५।
३- गुजराती भाषा नु वृहद् व्याकरण - रायबहादुर कमलाशंकर प्राणशंकर त्रिवेदी, पृ०२१
४- जैन गुर्जर कविओ (प्रथम भाग) - मोहन लाल दलीचंद देसाई, पृ० १३।
५- बड़ौदा जन गणना रिपोर्ट सन् १९२१ - सत्यव्रत मुखर्जी, पृ० २८६।

१।५ साहित्यिक समानता

जिस प्रकार गुजराती और हिन्दी भाषा अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा अधिक निकट है उसी प्रकार गुजराती और हिन्दी साहित्य भाव विचार और रूप आदि की दृष्टि से अन्य साहित्यों की तुलना में अधिक समान हैं। वर्तमान काल में भारतीय साहित्य विभिन्न भाषाओं में होते हुए भी मूलत: एक ही हैं, परन्तु गुजराती और हिन्दी साहित्य की परस्पर समानता विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। जिस प्रकार आदिकालीन जैन और चारण काव्य धारा गुजराती और हिन्दी में समान रूप से मिलती हैं, उसी प्रकार मध्ययुगीन भक्ति काव्य परम्परा में कृष्ण और संत काव्य परम्परा दोनों में समान रूप से मिलती हैं। आधुनिक काल में गांधीवादी विचारधारा ने इन दोनों साहित्यों को विशेष रूप से प्रभावित किया है। प्रारम्भ से ही इन दोनों साहित्यों की साहित्यिक विधाएं ही नहीं वरन् अभिव्यंजना शैली, अप्रस्तुत विधान, छंद योजना समान रूप से विकसित हुई हैं। श्री अगरचन्द नाहटा ने एक स्थान पर ११५ से अधिक ऐसे काव्य रूपों की सूची व परिचय दिया है जो गुजराती और हिन्दी में ~~समान रूप से~~ आदि काल और मध्यकाल में समान रूप से प्रचलित थे[१]।

आशय यह कि प्रारम्भ से गुजरात हिन्दी भाषी प्रदेश के समान एक ही भाषा में एकसा साहित्य सृजन करता रहा, परवर्ती काल में जब गुजराती भाषा साहित्यिक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में स्थापित हो गयी तब भी हिन्दी और गुजराती की साहित्यिक चेतना तथा रूप में विशेष रूप से समानता बनी रही।

२। गुजरात में हिन्दी

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि भौगोलिक नैकट्य (प्राकृतिक अवरोधों के अभाव में आवागमन की सुगमता), राजनैतिक एवं सांस्कृतिक एकता, भाषाओं की परस्पर समानता तथा साहित्यिक एकात्मता आदि कुछ ऐसी बातें हैं जिनके

१- प्राचीन भाषा काव्यों की विविध संज्ञाएं, 'नागरीप्रचारिणी पत्रिका', वर्ष ५८, अंक ४, सं० २०१०, पृ० ४१६।

कारण गुजरात में प्रारम्भ से ही हिन्दी काव्य परम्परा मिलने लगती है। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि चालुक्य राजपूत जिस भाषा को गुजरात में लाये थे वह हिन्दी की ही एक बोली थी[1]। आगे चल कर यह स्वतन्त्र भाषा गुजराती के रूप में विकसित अवश्य हो गयी थी परन्तु कविता की भाषा सर्वत्र एक ही रही जिसे कुछ विद्वान् जूनी हिन्दी जूनी गुजराती नाम से अभिहित करते हैं[2]। कुछ विद्वान इसे ही प्राचीन हिन्दी या राजस्थानी आदि नाम देते हैं। प्रसिद्ध जैन आचार्य मुनि जिन विजय जी ने एक स्थान पर कहा है कि मेरा दावा है कि आधुनिक हिन्दी और आधुनिक गुजराती की सगी मां नहीं तो धाय तो जरूर राजस्थानी है। राजस्थानी ही के अंचलों का दुग्धपान करके हिन्दी और गुजराती के बाल्य-जीवन का पोषण और संवर्धन हुआ है[3]। वस्तु स्थिति जो भी हो परन्तु इतना निश्चित है कि प्रारम्भ से ही हिन्दी भाषी प्रदेश की साहित्यिक परम्परा गुजरात में वर्तमान रही है जो गुजराती साहित्य के प्रारम्भ हो जाने के पश्चात भी गुजराती की हिन्दी काव्य परम्परा के रूप में हमें आधुनिक काल तक अविच्छिन्न रूप से प्राप्त होती है।

गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के उक्त कारणों के अतिरिक्त ऐसे अनेक धार्मिक सम्प्रदाय तथा उनके आचार्य एवं प्रचारक मिलते हैं जिनका गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। आशय यह कि मध्यकालीन वैष्णव भक्ति आन्दोलन तथा संत एवं सूफी मत के प्रचारकों ने हिन्दी की साहित्यिक परम्परा को गुजरात में प्रतिष्ठित एवं विकसित होने में विशेष रूप से सहायता प्रदान की है। महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य तथा उनके पुत्र श्री बिठ्ठलनाथ जी ने गुजरात की अनेक यात्रा की थी, जिसके परिणाम स्वरूप

१- गुजराती भाषा नु वृहद् व्याकरण - रायबहादुर कमलाशंकर प्राणशंकर त्रिवेदी, पृ० २१।

२- जैन गुर्जर कवियो (प्रथम भाग) - मोहनलाल दलीचंद देसाई, पृ० १४।

३- द्वितीय अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक संमेलन में सभापति पद से दिए गए भाषण से।

आज भी पुष्टिमार्गी वैष्णवों की संख्या आज गुजरात में सर्वाधिक है।[१] पुष्टि मार्ग की धर्म भाषा क्योंकि ब्रजभाषा थी, और वैष्णव भक्तों को कृष्ण के प्रदेश की भाषा ब्रजभाषा में आत्मनिवेदन किए बिना संतुष्टि नहीं होती थी,[२] इसलिए गुजरात में ब्रजभाषाकाव्य शैली विशेष रूप से पल्लवित हो सकी। पहले गुजरात में ब्रजभाषा की कविता का बड़ा आदर था और आज भी वैष्णवों में वह यथावत है। महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य के समान कबीरदास की गुजरात यात्रा एक सर्वविदित सत्य है। संत कबीर के अनुयायी आज भी सारे गुजरात में मिलते हैं जो कबीर की हिन्दी रचनाओं को बड़ी श्रद्धा के साथ पढ़ते पढ़ाते हैं। कबीर के समान ही और भी अनेक संत गुजरात में हुए हैं जैसे दादू, प्राणनाथ, निरांत, रविदास, भाण साहब, अखा आदि। इन सभी सन्तों की हिन्दी में रचनाएं मिलती हैं। गुजरात में प्रणामी पंथ, रवि पंथ, दादू पंथ, रामानन्दी, निरांत पंथ, राधा स्वामी, वीराणा, बीजमार्गी, रामस्नेही, उदासी, कबीर पंथ, आदि अनेक निर्गुण सम्प्रदाय प्रचलित हैं जिनमें से प्राय: सभी की धर्मभाषा हिन्दी है। निर्गुण सम्प्रदायों के समान गुजरात में अनेक सूफी सन्तों के मत भी प्रचलित हैं जिन्होंने हिन्दी में अनेक रचनाएं की हैं। इन सूफी सन्तों ने अपनी भाषा को गूजरी कहा है तथा जिस प्रकार दक्षिण भारत में दक्खिनी नाम से एक विशिष्ट हिन्दी की शैली मुसलमान सन्तों तथा कवियों द्वारा विकसित हुई है उसी प्रकार गुजरात में गूजरी नामक एक विशिष्ट हिन्दी शैली विकसित हुई है। वस्तुत: शेख बहाउद्दीन बांभन (१३८८) तथा हजरत कुतबे आलम (१३८८) ने गुजरात में खड़ी बोली की काव्य परम्परा को स्थापित किया है, जिसकी परम्परा आज भी गुजरात में जीवित है।

अपभ्रंश की परम्परा के समाप्त हो जाने के पश्चात गुजरात के जैन साधुओं ने गुजराती के साथ साथ हिन्दी को भी अपने उपदेशों की भाषा के रूप में स्वीकृत रखा। अनेक जैन साधु जिनका प्रचार या प्रभाव क्षेत्र गुजरात की सीमाओं से बाहर

१- ब्रजभाषा - डा० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० १५।

२- मकरंद - डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल। पृ० १२७

३- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० ६७७।

होता था वे मुख्य रूप से हिन्दी में ही लिखा करते थे। ऐसे भी अनेक जैन साधु मिलते हैं जो गुजरात के बाहर कभी नहीं गये फिर भी गुजराती में न लिख कर उन्होंने हिन्दी में ही लिखा है। आशय यह कि गुजरात के प्राय: सभी प्रमुख धार्मिक सम्प्रदायों ने हिन्दी को अपने धर्म की पवित्र भाषा के रूप में स्वीकृत किया तथा उसकी काव्य परम्परा को गुजरात में विशेष रूप से विकसित होने का न केवल अवसर प्रदान किया वरन् स्वयं उसके विकास में सक्रिय योगदान दिया है। यहां यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के विकास में केवल उन धार्मिक सम्प्रदायों का ही योगदान नहीं है जिनका प्रभाव और प्रचार क्षेत्र गुजरात के बाहर भी है परन्तु प्रणामी, धामी, भाणदासी, स्वामी नारायणी आदि ऐसे सम्प्रदायों का भी महत्वपूर्ण योगदान है जो गुजराती भाषी क्षेत्र के बाहर नहीं मिलते हैं। इससे यह सहज ही सिद्ध हो जाता है कि गुजरात में हिन्दी को सहज द्वितीय भाषा के रूप में प्रारम्भ से ही स्वीकृत कर लिया गया था, तभी तो किसी बाह्य आवश्यकता तथा भौतिक प्रयोजन के अभाव में भी यहां व्यक्तियों ने हिन्दी में अपने भाव और विचारों को अभिव्यक्त कर इसे भारत की प्रकृत राष्ट्रभाषा सिद्ध कर दिया है।

जिस प्रकार गुजरात के वैष्णव कवियों ने गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा में ब्रजभाषा काव्यधारा को प्रारम्भ किया तथा संत एवं सूफी कवियों ने खड़ी बोली में रचनाएं प्रारम्भ की, उसी प्रकार राजस्थान से आये अनेक चारण कवियों ने गुजरात सौराष्ट्र तथा कच्छ के अनेक हिन्दू मुसलमान शासकों का आश्रय प्राप्त कर यहां चारणी काव्य परम्परा की स्थापना की। गुजरात के चारणों ने डिंगल के साथ साथ पिंगल में भी रचनाएं की हैं। उन्होंने राज प्रशस्तियों के साथ साथ शुद्ध साहित्य एवं धार्मिक साहित्य भी लिखा है। सौराष्ट्र की प्राय: सभी रियासतों में दशहरा उत्सव मनाने की ऐसी परम्परा थी कि उस समय गुजरात तथा गुजरात के बाहर के अनेक हिन्दी कवि तथा विद्वान एकत्रित हो कविता पाठ तथा शास्त्र चर्चा करते थे तथा श्रेष्ठ कवियों तथा विद्वानों को दरबार की

और से यथोचित पुरस्कार आदि दिया जाता था।[१] इसी प्रकार गुजरात के विशिष्ट लोक नाट्य रूप भवई में एक हिन्दी भाषी पात्र अनिवार्य रूप से मिलता है, जो हिन्दी में कुपथ आदि का पाठ करता है। अभी हाल में एक सूर विजय नाटक कम्पनी का पता चला है जो हिन्दी के नाटकों को खेलती थी[२]। गुजरात में लिखे गये हिन्दी साहित्य का परिचय आगे दिया गया है, यहां केवल इतना ही ज्ञातव्य है कि गुजरात की जनता के समान यहां के शासक वर्ग ने भी हिन्दी काव्य परम्परा को हर प्रकार से विकसित किया है। इस प्रसंग में कच्छ के महाराज श्री लखपत सिंह का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने अपनी राजधानी भुज में एक ब्रजभाषा पाठशाला की स्थापना की थी,[३] जो सन् १७५३ से १९४७ तक भुज दरबार की सहायता से निरन्तर हिन्दी साहित्य के पठन पाठन की व्यवस्था ही नहीं करती रही वरन् इसने अनेक हिन्दी के कवियों तथा काव्यशास्त्र के आचार्यों को जन्म दिया है। महाराव लखपत सिंह स्वयं हिन्दी के श्रेष्ठ कवि तो थे ही, वे हिन्दी के महान् प्रेमी तथा हिन्दी कवियों के उदार आश्रयदाता भी थे। उनकी इस ब्रजभाषा पाठशाला को गुजरात के प्रसिद्ध कवि न्हाना लाल ने कच्छ के महाराव का कीर्ति मुकुट कहा है।[४] अन्यत्र उन्होंने इसके विषय में लिखा है कि काव्य कला सिखाने वाली एक पाठशाला कच्छ भुज में थी और आज भी है। कवियों का सृजन करने वाली पाठशाला कदाचित दुनियां भर में अद्वितीय होगी। यहां पढ़कर अनेक काव्य रसिक राज दरबार में कविराज सिद्ध हुए हैं। इस काव्यशाला में काव्य शास्त्र सिखाये जाते हैं।[५] सम्पूर्ण पश्चिमी भारत में इस पाठशाला की ख्याति थी तथा राजस्थान,

---

१- गोविन्द गिल्ला भाई की स्मरण पोथी, पृ० ३,४।

२- इस सूचना के लिए आदरणीय कुंवर चंद्र प्रकाश सिंह जी के लिए विशेष रूप से आभारी हूं।

३- भुज कच्छ की ब्रजभाषा पाठशाला - कुंवर चंद्र प्रकाश सिंह, पृ० १।

४- कवीश्वर दलपत राम, भाग तीन - कवि न्हाना लाल, पृ० १५६।

५- वही।

मालवा, आदि प्रदेशों से यहाँ कवि काव्य शास्त्र की शिक्षा प्राप्त करने आते थे[१]।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गुजरात में हिन्दी काव्य परम्परा को विकसित होने के लिए सभी प्रकार के सुयोग प्राप्त थे। साथ ही हिन्दी के प्रसार एवं प्रचार तथा साहित्य की व्यापकता, उत्कृष्टता आदि गुणों के कारण भी हिन्दी गुजरात में राष्ट्रभाषा के रूप में शताब्दियों पूर्व स्वीकृत हो चुकी थी। प्राचीन काल में जो स्थान संस्कृत आदि भाषाओं को प्राप्त था वही स्थान परवर्ती काल में जब हिन्दी साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित हो गयी तब हिन्दी को प्राप्त हो गया था। श्री हरगोविन्द द्वारकादास कांटावाला ने लिखा है कि "पिछली दो शताब्दियों से गुजरात के कवि हिन्दी को भी शिष्ट भाषा मान कर उसमें काव्य रचना करने लगे थे। और भाट चारण तो उससे पहले भी हिन्दी में अथवा चारणी भाषा में कविता करते थे"[२]। इतना ही नहीं वरन् गुजरात में हिन्दी भाषा और साहित्य का अध्ययन अपने आप में एक उपलब्धि माना जाता था, उसका विशेष सांस्कृतिक और शैक्षणिक महत्व था। श्री डाह्या भाई पीताम्बरदास देरासरी ने गुजरात में हिन्दी के सांस्कृतिक महत्व तथा अध्ययन अध्यापन की परम्परा का वर्णन करते हुए लिखा है कि "गुजरात में हिन्दी के प्रचार की तरफ सहज दृष्टिपात करें तो मालूम होता है कि पौन सौ वर्ष पूर्व की जन समाज की शिक्षा की स्थिति देखते हुए, ज्ञात होता है कि उस समय के अपने बहुश्रुत व्यक्ति मन लगा कर खूब ब्रजभाषा का अध्ययन करते थे। श्री मद्वल्लभाचार्य के नवरत्नों में से नंद दास जी की मान मंजरी और अनेकार्थ मंजरी से प्रारम्भ कर, सुन्दर शृंगार, कवि प्रिया, रसिक प्रिया, छंद शृंगार, भाषा भूषण, बिहारी सतसई, वृंद सतसई और जसुराम की राजनीति, आदि ग्रंथ सीखते थे। वयोवृद्ध सुन्दर विलास, तुलसी कृत रामायण, योग वाशिष्ठ आदि

१- भुज कच्छ की ब्रजभाषा पाठशाला - कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह, पृ० ११।

२- गुजराती भाषा नी उत्पत्ति - वसंत (मासिक) हरगोविन्द द्वारकादास कांटावाला, आश्विन सं० १९७०, पृ० २५।

पढ़ते थे । राजकोट के पुराने एक राजकुमार महेरामण सिंह और उनके मित्रों द्वारा लिखित प्रवीण सागर अत्यंत मान्य ग्रंथ समझा जाता था । मल्व के बनियां गृहसुथ्य द्वारा अपनी मृत बहिन की स्मृति में लिखित , उपदेश बावनी या किशन बावनी भी कंठस्थ की जाती थी । एक गुजराती गृहस्थ (लल्लू लाल जी) द्वारा लिखित प्रेम सागर यद्यपि ब्रजभाषा का श्रेष्ठ ग्रंथ माना जाता है । मुत्सद्दी वर्ग में जिस व्यक्ति को ऐसा और संस्कृत भाषा का इतना भी ज्ञान न हो तो उसे गवार माना जाता था"।[१]

श्री डाह्या भाई के इस विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि बहुत समय पहले ही हिन्दी गुजरात में सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक महत्व की भाषा मानी जाने लगी थी । परिणाम स्वरूप यहां न केवल हिन्दी भाषा और साहित्य का अध्ययन अध्यापन हुआ वरन् हिन्दी साहित्य की एक स्वतंत्र गुर्जर परम्परा विकसित हुई । महाकवि न्हानालाल ने हिन्दी के राष्ट्रभाषा रूप की चर्चा करते हुए लिखा है कि"चंद रासा की पराक्रम गाथा के कारण उस समय राज दरबारों की राजभाषा हिन्दी थी, सूरदास की सूरावट मधुरी पदावली के कारण कृष्ण मंदिरों की कीर्तन भाषा हिन्दी थी, तुलसी कृत रामकथा के महाग्रंथ के कारण प्रत्येक तीर्थवासी जोगियों की जोग भाषा हिन्दी थी, भारत के प्रान्त प्रान्त में घुमनेवाली देशी परदेशी सेनाओं के सेनानियों की सैन्य भाषा हिन्दी थी, विचार सागर जैसे समर्थ वेदान्त ग्रंथ उस समय हिन्दी में लिखे जाते थे, काव्यशास्त्रों की रचना उस समय हिन्दी में होती थी । अपने मध्ययुग का ज्ञान भंडार हिन्दी भाषा में था । किसी महत्वाकांक्षी को भारत विख्यात महाग्रंथ लिखना हो तो उस समय वह हिन्दी में ही लिखता"।[२]

१- गुजरातितोए हिन्दी साहित्य मां आपेलो फाडो - डाह्याभाई पीताम्बर दास दरासरी, पृ० १-२ ।

२- कवीश्वर दलपतराम ,भाग ३ - न्हानालाल, पृ० १०८ ।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन काल से ही हिन्दी गुजरात में अनेक भौगोलिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि कारणों से राष्ट्रभाषा के रूप में सहज स्वीकृत थी, तथा गुजराती के समानान्तर उसमें साहित्य सजृन तो होता ही था, साथ ही गुजरात के सामाजिक जीवन में उसका महत्वपूर्ण स्थान था। प्राचीन काल में हिन्दी का जो महत्वपूर्ण स्थान गुजरात में था उसे नवीन राष्ट्रीय जागृति ने और भी अधिक वेग प्रदान किया है। १६३४ में कांग्रेस द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में औपचारिक स्वीकृति मिलने से पूर्व ही गुजरात के महान् क्रान्तिकारी विचारक श्री दयानन्द सरस्वती ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में हिन्दी को ही चुना। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का स्वप्न सबसे पहले गुजरात और बंगाल के महापुरूषों ने ही देखा है।[१] इस प्रसंग में महात्मा गांधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, काका कालेलकर, आदि मनीषियों के नामों के साथ बड़ौदा नरेश महाराजा सर सयाजी राव गायकवाड़ का उल्लेख भी किया जा सकता है जिन्होंने न केवल हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी हिन्दी की संस्थाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की, वरन् अपने राज्य में हिन्दी ग्रंथों के प्रणयन तथा प्रकाशन की सुनियोजित व्यवस्था कर दी थी[२]। महाराजा सयाजी राव ने अपने राज्य के सभी कर्मचारियों के लिए हिन्दी भाषा का ज्ञान अनिवार्य कर दिया था साथ ही अपने राज्य की शिक्षा संस्थाओं में हिन्दी के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था भी कर दी थी। सन् १६११ में जाम नगर के महाराज के नाम महाराजा सयाजी राव का निम्नलिखित पत्रांश हिन्दी विषयक उनकी विचारधारा को स्पष्ट कर देता है: "सारे हिन्दुस्तान के लिए एक ही भाषा होनी चाहिए तथा वह हिन्दी होनी चाहिए। इसके लिए हमें क्या प्रयत्न करने चाहिए? इसके लिए अपनी भाषाओं को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु

१- हिन्दी व दक्षिण भारत की स्थिति, किशोरीदास वाजपेयी, हिन्दुस्तान दैनिक, १३-३-६३, पृ० ४।

२- श्री सयाजी गौरव ग्रंथ - सं० रामचंद्रराव शाभराव माने पाटील, पृ० २४८, २४६।

आप इसे मानते हों तो क्या हिन्दी को अपने राज्य के विद्यालयों में प्रारम्भ करने के लिए तैयार हैं ? आदि ।[१] महाराजा सयाजी राव ने अपने न्यायालय में हिन्दी का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया था तथा वकीलों के लिए भी हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य कर दिया था ।[२] आशय यह कि जिस प्रकार प्राचीन काल में गुजरात के सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान था वही स्थान उसका आधुनिक युग में भी बना रहा है तथा वह राजा और प्रजा दोनों द्वारा समान रूप से समादृत और स्वीकृत रही हैं । आजकल उसका रूप अवश्य बदल गया है परन्तु गुजरात के जीवन में हिन्दी का स्थान अब भी वही है ।

सम्प्रति गुजरात में हिन्दी भाषी जनता की संख्या, ६०५८८४ कही जाती है,[३] जबकि इसको समझने तथा इसके द्वारा अपना दैनिक व्यवहार चलाने वालों की संख्या उक्त संख्या से कई गुनी अधिक है । इसके अतिरिक्त आजकल गुजरात के सभी विद्याकेन्द्रों में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान है तथा गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अहमदाबाद, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, गुजरात विद्यापीठ, एवं बंबई विद्यापीठ आदि हिन्दी प्रचारक संस्थाओं द्वारा हिन्दी का इतना प्रचार आज गुजरात में हो चुका है कि उसे गुजराती के पश्चात् आज सब प्रकार से सर्व सामान्य जनता की भाषा कहा जा सकता है ।

इस प्रकार गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के प्रारम्भ के मूलभूत कारणों पर विचार कर लेने तथा गुजरात के सामान्य जीवन में उसके स्थान का परिचय प्राप्त कर लेने के पश्चात अब गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के विषय में विचार किया जा सकता है ।

१- श्री सयाजी राव गायकवाड़ यांचे चरित्र - दा० ना० आप्टे, पृ० ७०२ ।
२- वही, पृ० ७०२ ।
३- गुजरात एक दर्शन - शिवप्रसाद बी० राजगोर, पृ० ५१६ ।

३।० गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का परिचय

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के हिन्दी साहित्य के इतिहास के आदि काल को लेकर हिन्दी में काफी ऊहापोह हुआ है। स्वर्गीय श्री चंद्रधर शर्मा गुलेरी, महापंडित श्री राहुल सांकृत्यायन, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि हिन्दी के प्रमुख विद्वानों की शोधों के परिणाम स्वरूप उक्त काल का न केवल नाम ही बदला है वरन् रूप भी बदल गया है। पूर्वी भारत के बौद्ध सिद्धों की बानियाँ तथा पश्चिमी भारत के विशेष कर जैन कवियों की अपभ्रंशाभास रचनाओं को पुरानी हिन्दी के नाम से स्वीकृत कर लिया गया है। परन्तु जिस प्रकार बंगाल के कुछ विद्वानों ने सरहपा आदि की भाषा को प्राचीन बंगला माना है[1] तथा अन्य कुछ विद्वानों ने चर्यापदों की भाषा को परिनिष्ठित मैथिली तथा परिनिष्ठित बंगला की मध्यवर्तिनी भाषा माना है,[2] उसी प्रकार गुजरात के विद्वानों ने पश्चिमी भारत में लिखे गये जैन साहित्य की भाषा को जूनी गुजराती या गुर्जर अपभ्रंश[3] आदि नाम देकर उसे प्राचीन गुजराती साहित्य के अन्तर्गत परिगणित किया है। आशय यह कि हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में तथाकथित आदि कालीन साहित्य गुजराती के इतिहास ग्रंथों में भी जूनी गुजराती या प्राक् नरसी युगीन साहित्य के नाम से परिगणित है।[4] ऐसी स्थिति में इस साहित्य के विषय में केवल यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उसकी रचना गुजरात में ही हुई है परन्तु विशुद्ध भाषा वैज्ञानिक रीति से विश्लेषण किए बिना यह अंतिम रूप से नहीं कहा जा सकता कि यह साहित्य प्राचीन हिन्दी का है या जूनी गुजराती का।

१- ले शां द मिस्तीके - डा० शहीदुल्ला, पृ० ५५।

२- मैथिली लिटरेचर - डा० जयकांत मिश्र, पृ० ११०।

३- गुजराती साहित्य (मध्यकालीन) भाग प्रथम - श्री अनंतराय रावल, पृ०५।

४- गुजराती साहित्य नुं रेखादर्शन खंड १ - श्री केशवराम का० शास्त्री, पृ० १०।

यद्यपि गुजरात में लिखे गये उक्त जैन साहित्य की भाषा को कुछ विद्वानों ने प्राचीन हिन्दी तथा प्राचीन गुजराती[१] आदि ऐसे नाम प्रस्तावित किये हैं कि जिससे यह साहित्य हिन्दी और गुजराती दोनों भाषाओं का समान रूप से प्राचीन साहित्य माना जा सके, परन्तु वस्तुत: समस्या विशुद्ध भाषायी है जिसका हल भाषा विज्ञान के आधार पर ही सम्भव हो सकता है । अत: प्रस्तुत अध्ययन में यह समूचा साहित्य विवादास्पद मान कर छोड़ दिया जाता है । यद्यपि यह निश्चित है कि यह साहित्य गुजरात में गुजरातियों द्वारा ही लिखा गया है । हो सकता है कि भविष्य में भाषा विज्ञान के आधार पर इसे प्राचीन हिन्दी के रूप में सिद्ध किया जा सके ।

इस युग के विवादास्पद साहित्य को छोड़ कर जब गुजरात में हिन्दी साहित्य के प्रारम्भ के विषय में विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि १४वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही हमें ऐसे कुछ मुसलमान सूफी संत तथा जैन कवि मिल जाते हैं जिनकी भाषा निर्विवाद रूप से हिन्दी कही जा सकती है । साथ ही जिनकी कोई गुजराती रचना नहीं मिलती । १५वीं शताब्दी में सर्वप्रथम नरसी मेहता तथा भालण आदि गुजराती के ऐसे कवि मिलते हैं जिनकी रचना निर्विवाद रूप से गुजराती भाषा में है/परन्तु गुजराती के साथ इनकी ब्रजभाषा में भी कुछ रचना मिलती है । इससे यह सहज ही सिद्ध हो जाता है कि गुजरात में हिन्दी काव्य परम्परा गुजराती काव्य परम्परा से अधिक प्राचीन है,साथ ही गुजरात में उसका विशेष महत्व भी था । श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई ने लिखा है पिछले समय में हिन्दी कवि सन्त लोक विनोद के लिए एकाध पद गुजराती आदि में लिखते थे परन्तु मुख्य रूप से वे अपनी रचना हिन्दी में ही करते थे ।[२] गुजराती और गुजरात में लिखे गये हिन्दी साहित्य की तुलना से भी यह तथ्य सिद्ध किया जा सकता है, साथ ही गुजरात में ऐसे अनेक हिन्दी कवि मिलते

१- जैन गुर्जर कविओ (प्रथम भाग) - श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई, पृ० १४ ।

२- वही, पृ० १४ ।

हैं जिन्होंने गुजराती में एक भी रचना न कर केवल हिन्दी में ही रचना की हैं। अद्यावधि शोधों के परिणाम स्वरूप गुजरात में १४वीं शताब्दी से २० शताब्दी तक चार सौ से अधिक हिन्दी के कवियों का पता चला है जिनमें से अधिकांश ऐसे हैं जिन्होंने केवल हिन्दी में ही रचना की हैं। नरसी मेहता, भालण, अखा, दयाराम दलपत राम, न्हानालाल, नर्मद, सागर आदि कुछ ही ऐसे कवि हैं जिन्होंने हिन्दी के साथ गुजराती में भी रचना की हैं। मध्यकाल में यद्यपि ऐसे अनेक कवि मिलते हैं जिन्होंने केवल गुजराती में ही रचना की हैं परन्तु उनकी रचना मुख्य रूप से धार्मिक ही है,[१] जबकि गुजरात के हिन्दी कवियों में अनेक कवि ऐसे हैं जिनकी रचना शुद्ध साहित्यिक हैं तथा शास्त्रीय शैली में लिखी गयी हैं।

गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा इतनी व्यापक तथा समृद्ध है कि उसे प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनार्थ तालिका रूप में ही प्रस्तुत किया जा सकता है।[२] अद्यावधि शोधों के परिणाम स्वरूप जो सामग्री प्रकाश में आयी है उससे ४१५ ऐसे कवि मिले हैं जिन्होंने हिन्दी में साहित्य सृजन किया है। इन कवियों में ६७ कवि ऐसे हैं जिनकी रचना विभिन्न प्राचीन काव्य संग्रहों में संकलित हैं परन्तु उनकी स्वतंत्र कृतियों तथा जीवन आदि के विषय में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती। शेष ३४८ कवियों के विषय में अपेक्षाकृत अधिक जानकारी उपलब्ध हुई हैं जो संलग्न तालिका में पांच शीर्षकों के अंतर्गत प्रस्तुत की गयी है। इस तालिका में गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का विश्लेषणात्मक परिचय प्रस्तुत किया गया है जिसकी व्याख्या के आधार पर गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की व्यापकता तथा समृद्धि सिद्ध की जा सकती है। संलग्न तालिका के अंतिम तीन स्तम्भों के आधार पर, सम्प्रति, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की व्यापकता तथा द्वितीय के आधार पर समृद्धि का परिचय प्रस्तुत किया जायेगा।

१- जयंती व्याख्यानो - आनन्दशंकर ध्रुव, पृ० २६३।

२- देखिए : परिशिष्ट द्वितीय।

३।१ गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की व्यापकता :

गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की व्यापकता निम्नलिखित आधारों पर सिद्ध की जा सकती है :

१- समयका आधार
२- प्रदेश का आधार
३- सामाजिक आधार
४- धार्मिक आधार

१ समय का आधार

काल-क्रम की दृष्टि से जब हिन्दी की काव्य परम्परा की व्यापकता के विषय में विचार करते हैं तो, जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि, १४वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से प्रारम्भ होकर आज तक गुजरात में हिन्दी की काव्य परम्परा अविच्छिन्न रूप से मिलती है। हिन्दी भाषी प्रदेश में भी हिन्दी की वास्तविक काव्य परम्परा बहुत कुछ इसी समय प्रारम्भ होती है। जैसे इस समय से पूर्व गुजरात में लिखा गया साहित्य विद्वानों के मतभेदों से मुक्त नहीं है उसी प्रकार इस समय का हिन्दी भाषी प्रदेश में लिखा गया हिन्दी साहित्य भी विद्वानों के बीच विवाद का विषय बना हुआ है। १४वीं शताब्दी से जो हिन्दी साहित्य गुजरात में मिलने लगता है वह सब प्रकार के मतभेदों से मुक्त है, साथ ही उसकी अविच्छिन्न धारा क्रमश: विकसित होती हुई २०वीं शताब्दी में ह्रासोन्मुखी हो जाती है। गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के विकास और ह्रास का चित्र निम्नलिखित रेखाओं (ग्राफ) द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है[1]।

यह सह तथ्य ज्ञातव्य है कि गुजरात के सभी हिन्दी लेखकों का समय ज्ञात नहीं है, परन्तु २६१ कवियों का लगभग समय ज्ञात हुआ है जो इस प्रकार है :

---

१. देखिए इस पृष्ठ के पीछे।

१४वीं शताव्दी	-	४	कवि
१५वीं	,,	- ९	,,
१६	,,	- १७	,,
१७	,,	- ४१	,,
१८	,,	- ६६	,,
१९	,,	- १०३	,,
२०	,,	- २१	,,

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि १४वीं शताव्दी में प्रारम्भ होकर यह परम्परा १९वीं शताव्दी तक क्रमश: विकसित हो अपनी चरम सीमा को प्राप्त कर लेतीहैऔर २०वीं शताव्दी में इसके ह्रास के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगते हैं। २०वीं शताव्दी में राष्ट्रीय चेतना की जागृति के परिणाम स्वरूप जहाँ एक ओर हिन्दी भाषा का प्रचार जन समाज में बढ़ता है, वहीं प्रान्तीयता तथा प्रान्तीय भाषा के उद्बोधन के कारण हिन्दी की गुर्जर काव्य परम्परा पतनोन्मुख होने लगती है।[१] प्रान्तीयता की भावना को उत्तेजित करने में अंग्रेजों का विशेष योग दान रहा है। उन्होंने गुजरात के कुछ ऐसे लेखकों को जो हिन्दी में काव्य सृजन कर रहे थे यह कह कर कि यह तुम्हारी भाषा नहीं है तुम अपनी भाषा में ही लिखो, हिन्दी से विमुख कर दिया।[२]

सारांश यह कि समय की दृष्टि से गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा १४वीं शताव्दी से प्रारम्भ होती है (जिसके मूल और भी पीछे खोजे जा सकते हैं) तथा शनै: शनै: यह परम्परा केवल संख्या की दृष्टि से ही नहीं वरन् काव्य रूपों और काव्य विषयों के वैविध्य तथा काव्य सौष्ठव आदि की दृष्टि से भी समृद्ध होती

१- जैन गुर्जर कविओ (प्रथम भाग), मोहन लाल दलीचंद देसाई, पृ० १५।

२- कवीश्वर दलपतराम , भाग ३ - न्हानालाल, पृ० १५६।

जाती है। २०वीं शताब्दी में इस परम्परा के ह्रास के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगते हैं परन्तु अभी इसका अंत नहीं हुआ है। ६०० वर्षों की इस सुदीर्घ हिन्दी काव्य परम्परा को गुजरात में हिन्दी की व्यापकता तथा लोकप्रियता का प्रबल प्रमाण माना जा सकता है।

२ प्रदेश का आधार

भौगोलिक दृष्टि से यद्यपि उत्तर गुजरात ही हिन्दी भाषी प्रदेश के साथ जुड़ा हुआ है, परन्तु गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा हमें समूचे गुजरात में बिखरी हुई मिलती है। ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से वर्तमान गुजरात तीन प्रमुख भूखंडों में बांटा जा सकता है - गुजरात, सौराष्ट्र, कच्छ। गुजरात की प्राचीन राजधानी अहमदाबाद में हमें ३५ हिन्दी के कवि मिलते हैं जब कि सौराष्ट्र की प्रमुख राजधानियाँ, जामनगर, जूनागढ़, भावनगर, राजकोट में क्रमश: ७,६,८,५ कवि मिलते हैं, इसी प्रकार कच्छ की राजधानी भुज में २२ कवि मिलते हैं। इसके अतिरिक्त गुजरात सौराष्ट्र तथा कच्छ के छोटे छोटे गांवों तक में अनेक हिन्दी के कवि मिलते हैं। जिन कवियों के देश के विषय में निश्चित जानकारी मिल सकी है उनकी संख्या २५३। इनमें से लल्लूलाल जी, हरिनाथ, नारायण हेमचन्द्र, देवराम तथा लक्ष्मीराम गुजराती होते हुए भी गुजरात से बाहर क्रमश: आगरा, काशी, बम्बई तथा मालवा में रहे हैं, जिस प्रकार दलपतराय बंसीधर अहमदाबाद के मूल निवासी होते हुए भी उदयपुर के महाराणा के आश्रित हो जाने के कारण वहीं बस गये थे। उसी प्रकार उक्त कवि भी मूलत: गुजराती थे परन्तु अन्यत्र जा रहे थे। मीराबाई मूलत: राजस्थान की ही थी परन्तु अपने परवर्ती जीवन में गुजरात में आ गयी थी, तथा गुजराती में उनकी रचना भी मिलती है अत: मीराबाई को भी गुजरात की कवियित्री के रूप में परिगणित किया गया है। गुजरात के शेष कवि जिन स्थानों पर हुए हैं उन स्थानों की नामावली कविसंख्या के साथ यहां दी जा रही है जिससे गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की प्रादेशिक व्यापकता स्पष्ट हो सके -

अमरेली	२	चांदोद	१	पाटण	८	मोरवी	४
अहमदाबाद	३५	चांपानेर	१	पालनपुर	१	राजकोट	५
आमोद	६	जखौ	१	पालीताणा	१	राजेसर (धोलका)	१
अंकलेश्वर	३	जामनगर	७	पिलबई	१	राधनपुर	१
अंजार	१	जूनागढ़	६	पेटलाद	१	रानेर	१
ईडर	४	जंबूसर	२	पोरबन्दर	१	लखतर	२
ऋणिग्राम	१	डभाई	१				
करजण	१	डाकोर	१	प्रभासपाटण	१	लत्तीपुर	१
कसकमा	१	डुंगरपुर	१	फला	१	लीमड़ी	४
कीकरिया	१	तणाछा	१	बड़ौदा	४	वरलास	१
				कांढाय	१		
~~कुकमा~~	१	~~[illegible]~~		बीजापुर	२	बड़नगर	१
कुंडला	१	तलाजा	१	भड़ौच	१	बढ़वाण	४
कुंतलपुर	१	दियोधर	१	भावनगर	८	बसावड़	१
केराकोटा	१	दुधरेज	१				
खाखर	१	देशलपुर	१	भिटारा	१	वागड़	१
खाणगांव	१	द्वारिका	१	भुज	२२	विसनगर	२
खादडपुर	१	ध्रांगध्रा	६	मलातज	१	शिवपुर (बड़ौदा)	१
खानकोटडा	१	ध्रोल	१	मांडवी	१	शेखपुर	१
						सावरणी	१
खेड़ा	२	सावरणी	१	मालिया	१	सावली	१
खंभात	७	नखत्राणा	१	मुन्द्रा	१	सिहोर	५
गढडा	३	नड़ियाद	२	मूली	२	सूरत	७
गोंडल	१	नागराचा	१	मेथाण	१	सोमनाथ	१
चरोतर	२	नादरा	१	मेराड़	१	हलवद	१
		नानीखोमडी	१				

उक्त स्थानों के अतिरिक्त १० कवि कच्छ तथा ६ सौराष्ट्र में और हैं जिनके नगर अथवा ग्राम का निश्चित नाम ज्ञात नहीं हो सका है तथा १६२ कवियों का स्थान बिलकुल अज्ञात है। गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का भौगोलिक वितरण (ज्योग्राफिकल डिस्ट्रीब्यूशन) मानचित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।[१]

गुजरात के हिन्दी कवियों के प्रदेशों की नामावली तथा मानचित्र से यह बात निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाती है कि गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा गुजरात के किसी विशेष भूभाग तक सीमित या केन्द्रित नहीं रही, वरन् वह प्रारंभ से ही सार्वत्रिक रही है। गुजरात के छोटे से छोटे गांवों से लेकर बड़े से बड़े नगरों तक का योगदान यहां की हिन्दी काव्य परम्परा के विकास में है। आज भी गुजरात के गांव गांव में हिन्दी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ उपलब्ध होते हैं तथा अनेक ऐसे व्यक्ति मिल जाते हैं जिन्हें सहस्रों हिन्दी के छंद कंठस्थ हैं। इस प्रकार गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की व्यापकता तथा लोकप्रियता भौगोलिक आधारों पर सिद्ध हो जाती है, जिन्हें इस परम्परा की विशेष समृद्धि का कारण माना जा सकता है।

३ सामाजिक आधार

सामाजिक दृष्टि से विचार करने पर गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की व्यापकता और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है। गुजराती समाज का कदाचित् ही कोई ऐसा वर्ग बचा हो जिसने किसी न किसी रूप में सक्रिय योगदान देकर हिन्दी के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित न किया हो। गुजराती समाज के हिन्दू (जैन सहित), मुसलमान प्रमुख दोनों वर्गों के प्राय: सभी स्तरों के ऐसे व्यक्ति मिल जाते हैं जिन्होंने या तो अपने उदार आश्रय से हिन्दी काव्य परम्परा को प्रोत्साहित किया है या स्वयं सक्रिय योगदान दे उसे विकसित किया है। गुजरात में अहमदाबाद आदि स्थानों के मुसलमान शासकों तथा सौराष्ट्र एवं कच्छ के प्राय: सभी हिन्दू राजा महाराजाओं ने अनेकानेक हिन्दी कवियों को आश्रय प्रदान किया है तथा अनेक राजा महाराजाओं ने स्वयं हिन्दी में काव्य रचना की है।

गुजरात के राजाश्रित हिन्दी कवियों का परिचय निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हो जाता है :-

१ मानचित्र देखिए पृ. ६८ से पूर्व।

गुजरात के राजाश्रित हिन्दी कवि

(१) कर्ता नाम	(२) कृति	(३) देश	(४) काल	(५) आ० दा०
अमरसिंह बारोट	यशवंत जीवन चरित्र	लीमड़ी	१८वीं शती	[illegible] हरभमजी लीमड़ी नरेश
आदित्यराम	संगीत आदित्य स्फुट पद	जूनागढ़	१८१६	नवाब बहादुरखां जाम बीभाजी
आदित्यराम केवलराम	मान महोत्सव रागमाला	विसनगर	१७८६	मानाजीराव गायकवाड़, बड़ौदा नरेश।
आलाजी झूला	स्फुट रचना	पटन	सिद्धराज [illegible]	पाटण नरेश।
ईसरदास बारोट	हरिरस देव्याण निन्दास्तुति छोटा हरिरस बाल लीला गरुड़ पुराण गुण भावंत रास कैलास सभा पर्व वैराट गुण आगम शब्द, भजन, वाणी, गीत एवं प्रकीर्ण कविता आदि।	जामनगर	१५३८	जाम रावल [illegible], जाम नगर-नरेश

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
उत्तमरामजी	बाबी विलास की पूर्ति स्फुट काव्य	जूनागढ़	१६वीं शती	जूनागढ़ के नवाब [illegible]
औघड़ या उद्धव	करण जक्त मणि, कुकवि कुठार	लखतर	१८४१-१८६८	कर्णसिंह, लखतरनरेश।
कनककुशल	महाराउ श्री गोहडजी नो छंद, लखपत मंजरी नाममाला रस दीपिका (सुन्दर शृंगार की टीका)	भुज	१७४१	महाराउ लखपत भुज-नरेश
करसन बारोट	रामरस जगत प्रबोधिनी	राजकोट	१७८१	मेहरामणसिंह राजकोट-नरेश
कहानदास मेहड़ु	स्फुट रचना	बड़ौदा		गायकवाड़ [illegible], बड़ौदा-नरेश
कालिदास	स्फुट रचना	मूली (सौराष्ट्र)	१८७६	यशवंतसिंह, मूली नरेश
कुंवरकुशल	लखपत जस सिन्धु लखपत मंजरी नाममाला पारसति नाममाला लखपत पिंगल गोहड़ पिंगल लखपत स्वर्ग प्राप्ति समय महाराउ लखपत दुवानेत माता नो छंद	भुज	१७७८	महाराउ लखपति सिंह, भुज-नरेश

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
कृष्णाराम भट्ट	सिद्ध भेषज मणिमाला	अहमदाबाद	१७वींशती	जयपुर के महाराज
	जयपुर विलास			
	होली महोत्सव			
	सार सतक			
	पलाण्डु शतक			
केवलराम	बाबी विलास	अहमदाबाद	१७००	जूनागढ़ के नवाब
	स्फुट काव्य			
केशव	फतह सागर	मिटारा (कच्छ)	१८वीं शती	फतहमुहम्मद
				(दीवान भुज
				महाराउ देशल
केशव अयाची	शब्द विभुषण	भुज	१८८८	भुज के महाराव
गोपाल जगदेव	काव्य प्रभाकर	भुज	१८६०	महाराउ खेंगा, भुज
	मिलिंद शतक			नरेश, पृथ्वीसिंह,
	रसाल मंजरी			विजापुर-नरेश
	तुत्वात्म बोध			
	खेंगार उद्वाहानन्द पीयूष			
	शब्द विभुषण			
	शौर्य बावनी			
	अलंकार निधि			
	छंद विधि गमि चन्द्रिका			
गंजन	कमरुद्दीनखान हुलास	[illegible]	१७३०	दिल्ली के बाद-
				शाह कमरुद्दीनखां
				के आश्रित ।
जसुराम	राजनीति	आमोद	१७५१	जामनगर के
	षटऋतु वर्णन			आश्रित ।

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
जीवन विजय	जीवन बावन बावनी	राजकोट	१८७१	मेहरामण सिंह आ० राजकोट नरेश ।
जैसा लांगा	स्फुट रचना प्रवीण सागर के सहकर्ता	,,	,,	,, ,,
ठारणभाई मधुभाई मेहडू	स्फुट रचना	पाटना (भाल)		वल्लभीपुर के राजाओं के आ०
तुलजाराम	मानसिंह विलास	ध्रांगध्रा	१८७६	मानसिंह ~~के आश्रित~~ ध्रागध्रा नरेश
दलपतराय बंसीधर	अलंकार रत्नाकर पिंगल भाषा	अहमदाबाद	१८३६	जयपुर के महाराणा
दुर्लभदान चारण	बुद्धि विलास अमृत विलास	आमोद गोंडल	१८४०	देवाजी, गोंडल नरेश
नरसिंहदास	बाबी वंश प्रशस्ति	अहमदाबाद		जूनागढ़ के नवाब
नाथूराम सुन्दरजी शुक्ल	तख्त यश त्रिवेणि का संगीत तख्त विनोद तख्त यश बावनी	भावनगर	१८६४	तख्तसिंह, भावनगर नरेश
प्रभुराम	मान विनोद त्रिक्रम प्रकाश	ध्रांगध्रा	१८३४	मानसिंह ध्रांगध्रा राव त्रिक्रमदास
पाताभाई	जसो विलास	भावनगर	१८५०	जसवन्तसिंह भावनगर नरेश

पिंगलसिंह गढ़वी	बैकुंठ पिंगल प्रवीणसागर के सहकर्ता	वढ़वान	१८७२	मेहरामण सिंह राजकोट नरेश
पिंगलसिंह पाताभाई गढ़वी	तख्त विलास भाव भूषण	भावनगर	१८८७	भावसिंह भाव नगर- नरेश
ब्रज कवि(बारोट)	हरि विजय विलास	भावनगर	१८५८	जसवंतसिंह भाव नगर नरेश
बैराभाई कविराज	खेंगार गुण रत्नाकर	भुज	१६१८	महाराउ खेंगारजी भुज नरेश
भारमल	ज्योतिष जड़ाव ब्रह्माण्ड पुराण	भुज	१७११	महाराउ देशल भुज-नरेश
रणमल अदाभाई वारोट	रण पिंगल चित्र काव्य	राजकोट	१८०२	राजकोट के महाराजा
	प्रवीण सागर की पूर्ति और टीका सुन्दर शृंगार की टीका	राजकोट	१८०२	
रविराज	नर्मदा लहरी स्फुट पद	मूली	१८७६	केसरीसिंह जाडेजा मूली नरेश
लखधीर(चारण)	खेंगार चरित्र	भुज	१६वीं शती	भुज के महाराउ
लाधाजी	सुजस शृंगार	भुज	प्रागमल-जी द्वितीय के समय ।	

वजमालजी प्रबत जी मेहडू	विजय प्रकाश अमरकोष भाषा विभा विलास	जामनगर	१७४३	जाम विभाजी जामनगर-नरेश
श्रीपति	हिम्मत प्रकाश संस्कृत माधव निदान वैद्यक ग्रंथ का अनुवाद		१६७३	सयैद हिम्मत खां के आश्रित
सांया झूला	नाग दमण रूक्मणि हरण अंगद विष्टी	ईडर	१५७६	ईडर के महाराजा
हमीरजी रतनू	यादव वंश वर्णन लखपत पिंगल पिंगल प्रकार हमीर नाम माला भवमाल गीत केलियाँ	भुज	१७११	महाराउ देशलजी, लखपति जी भुज नरेश
हरदास मीसण	भृंगी पुराण जालंधर पुराण सभापर्व	मोरवी		

ऊपर दी गयी तालिका से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि गुजरात सौराष्ट्र तथा कच्छ के राजा महाराजाओं के साथ साथ जयपुर, उदयपुर तथा दिल्ली तक के शासकों द्वारा गुजरात के हिन्दी कवियों का समादर हुआ है तथा वहाँ उन्हें राजाश्रय प्राप्त हुआ है। उक्त तालिका के कवियों की सूची से यह बात भी स्पष्ट है कि अनेक चारण कवियों के अतिरिक्त आदित्यराम आदि अनेक ब्राह्मण तथा कनक कुशल आदि जैन कवियों को भी राजाश्रय प्राप्त हुआ है। गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा को इसी प्रकार का प्रोत्साहन गुजरात की अनेक धार्मिक सम्प्रदायों द्वारा भी प्राप्त हुआ है।

गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के उक्त प्रोत्साहकों को छोड़ कर जब हम प्रोत्साहित कवियों की सामाजिक स्थिति पर विचार करते हैं तो गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की व्यापकता तथा लोकप्रियता और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है। गुजरात के अनेक राजा महाराजा[१] तथा छोटे बड़े ठाकुरों को छोड़कर, जिन्होंने हिन्दी में स्वयं कविता की है, निम्नलिखित अन्य हिन्दू जातियों के कवियों ने भी हिन्दी में कविता की है : सोनी, बढ़ई, चमार, कुनबी, पटेल, कायस्थ, श्रीमाली वैश्य, महेता वैश्य, लुहाणा, चारण, भाट, ब्रह्मभट्ट, रावभाट, साठोदरा, गिरनारा, सारस्वत, औदीच्य, नागर आदि। यहाँ यह बात विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि गुजरात के अनेकानेक कवियों की जाति अभी तक ज्ञात नहीं हो सकी है, परन्तु उक्त जातियों के अतिरिक्त अनेक जैन कवियों तथा मुसलमान कवि भी हैं जिन्होंने गुजरात की हिन्दी-काव्य परम्परा को अनेक रूपों में समृद्ध किया है। आशय यह कि जैन कवियों ने केवल जैसे धार्मिक साहित्य ही नहीं लिखा है उसी प्रकार अनेक मुसलमान कवि सूफी न होकर संत हैं जैसे काजी अनवर मियां तथा इब्राहीम जुशब महमद मुखी बरतजी जैसे शुद्ध साहित्यकार भी हैं। कवियों के साथ साथ गुजरात में इन्दुमती, उजली, खुमान बाई, गौरी बाई आदि अनेक कवयित्रियां भी हैं

१- देखिए परिशिष्ट द्वितीय - ब (गुजरात के राजवंशी कवि)।

जो विभिन्न जातियों की हैं तथा उन्होंने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी को माध्यम के रूप में स्वीकृत किया है । इस प्रकार यह स्पष्टत: सिद्ध हो जाता है कि गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा किसी जाति, वर्ग, या सामाजिक स्तर तक सीमित नहीं रही वरन् सहज स्वाभाविक सर्वजनीन परम्परा है । गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की व्यापकता तथा लोकप्रियता का जो प्रमाण है वही वस्तुत: उसके रूप और रस के वैविध्य तथा वैशिष्ट्य का कारण भी है ।

४ धार्मिक आधार

वर्तमान गुजरात राज्य में प्राय: वे सभी धार्मिक सम्प्रदाय मिल जाते हैं जो भारत के विभिन्न प्रान्तों में प्रचलित हैं । परन्तु मध्यकाल में जब हिन्दी साहित्य की परम्परा गुजरात में प्रारम्भ होती है उस समय गुजरात की धार्मिक स्थिति अधिक भिन्न न होते हुए भी कुछ भिन्न थी । इस समय गुजरात में एक ओर जहां मुसलमानों के प्रभुत्व के कारण इस्लाम का प्रचार बढ़ रहा था वही नवीन वैष्णव सम्प्रदायों तथा संत सम्प्रदायों का विशेष रूप से गुजरात में प्रसार होने लगा था । इन सम्प्रदायों के गुजरात में स्थापित होने से पूर्व गुजरात में वैदिक हिन्दू धर्म के प्रश्चात बौद्ध और जैन धर्मों का प्रवेश विद्वानों ने चन्द्रगुप्त मौर्य के समय के पश्चात माना है[१]। ईस्वी सन् १-२ तक गुजरात में बौद्ध धर्म ब्राह्मण धर्म के साथ साथ सुस्थिर हो गया था[२]। जैन साधुओं को प्रारम्भ में विशेष रूप से राजाश्रय नहीं मिला परन्तु उनका विशेष प्रभाव गुजरात में बहुत प्राचीन काल से देखा जा सकता है[३]। ईसवी सन् ५००-१००० के बीच गुजरात में जैन धर्म का अपेक्षा कृत अधिक प्रचार हुआ परन्तु ईसवी सन् ५०० के आसपास ब्राह्मण तथा बौद्ध धर्मों का गुजरात में प्राधान्य इतिहास प्रसिद्ध है[४]। इसी समय में गुजरात में वलभीपुर में जैन साधुओं का सम्मेलन यह सिद्ध

१- Gujarat and its Literature - K.M.Munshi, p. 12.

२- Ibid,p. 13.

३- Ibid,p. 21.

४- Ibid,p. 31.

करता है कि उस समय गुजरात में जैन धर्म का प्रभाव धीरे धीरे बढ़ने लगा था । जैन साधु हरिभद्र (७५० ई०) ने बौद्ध धर्म के विरोध के कारण (क्योंकि उसके भाई को बौद्धों ने मार डाला था)[१] गुजरात में जैन धर्म का अच्छा प्रचार किया । परन्तु प्रारम्भ से ही गुजरात में शैवों का विशेष प्रभाव देखा जा सकता है । वलभीपुर के सभी शासक, एक के अपवाद के साथ, शैव ही थे तथा चालुक्य शासक भी सोमनाथ को अपना कुल देव मानते थे ।[२] आशय यह कि प्राचीन काल में गुजरात में सभी प्रमुख भारतीय धर्मों को समान स्थान प्राप्त था परन्तु किसी विशेष काल में किसी एक धर्म का प्राधान्य रहा है तो किसी अन्य काल में किसी दूसरे धर्म का विशेष प्रभुत्व दृष्टिगोचर होता है । परन्तु हिन्दी साहित्य के आदि काल के आसपास गुजरात में बौद्ध धर्म कभी का समाप्त हो चुका था ।[३] हेमचन्द्र के प्रभाव से इस समय गुजरात में जैन धर्म को वह स्थान अवश्य मिल गया था जो उससे पूर्व केवल ब्राह्मण सम्मत धर्मों जैसे शैव, वैष्णव आदि को प्राप्त था ।[४] १६वीं शताब्दी में गुजरात को नवीन वैष्णव भक्ति आन्दोलन ने विशेष रूप से प्रभावित किया ।[५] इससे पूर्व १४ वीं शताब्दी में ही गुजरात में सन्त-मतों का प्रवेश रामानन्द के माध्यम से हो चुका था जिसे कबीर, रैदास, सेना, दादू, सदना आदि सन्तों ने विशेष रूप से प्रचलित किया । निम्न वर्गीया हिन्दू तथा मुसलमान जनता को इन मतों ने विशेष रूप से प्रभावित किया ।[६] आज भी गुजरात का उच्च वर्ग वैष्णव या जैन अधिक है जब कि निम्न वर्ग संत मतावलंबी है । आशय यह कि हिन्दी

१- Gujarat and its Literature - K.M.Munshi, p.32.

२- Ibid, p. 76.

३- Ibid, p. 77.

४- Ibid, p. 78.

५- Ibid, p. 130.

६- Ibid, p. 114-115.

साहित्य के गुजरात में प्रारम्भ होने से पूर्व जैन, वैष्णव, शैव, संत तथा सूफी आदि अनेक धार्मिक सम्प्रदाय वर्तमान थे, जिनका परिचय यहां आवश्यक नहीं है। परन्तु इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा को विशेष रूप से प्रधान सभी धार्मिक सम्प्रदायों का यथायोग्य सहयोग प्राप्त हुआ था। अब तक की शोधों के परिणाम स्वरूप जो साहित्य प्रकाश में आया है, उससे यह बात स्पष्टत: सिद्ध हो जाती है कि वैष्णव, संत, सूफी, शैव, शाक्त तथा जैन सम्प्रदायों ने हिन्दी को अपने धार्मिक मतों के प्रचार तथा धार्मिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में स्वीकार किया था। निम्नलिखित तालिका से उक्त धार्मिक सम्प्रदायों की हिन्दी सेवा का तुलनात्मक चित्र प्रस्तुत किया जा सकता है -

सम्प्रदाय का नाम	कवि संख्या
शाक्त	३
शैव	३
स्वामी नारायणी	७
सूफी	१४
वैष्णव	३२
जैन	४४
संत	६)१

इस तालिका से यह स्पष्ट हो जाता है कि सर्वाधिक कवि संत हैं परन्तु यहां यह ध्यान रखना चाहिए कि संत नाम की कोई विशिष्ट धार्मिक सम्प्रदाय किसी आचार्य या संत महंत द्वारा प्रचलित नहीं हुई, यह नाम भारतीय विद्वानों द्वारा बहुत कुछ समान दार्शनिक तथा व्यवहार - पद्धति में विश्वास रखने वाली अनेक धार्मिक सम्प्रदायों या पंथों के लिए दिया गया है। गुजरात में संत मत नाम से अभिहित की जा सकने वाली सम्प्रदाय निम्नलिखित हैं, जिनमें से अधिकांश का सम्बन्ध हिन्दी के साथ रहा है :

प्रणामी पंथ, रविदासी पंथ, रामानन्दी पंथ, दादू पंथ, निरान्त पंथ, राधा स्वामी पंथ, पीराणा पंथ, बीजमार्गी पंथ, राम सनेही पंथ, उदासी पंथ, कबीर पंथ आदि । इसलिए स्वाभाविक है कि कवियों की संख्या सर्वाधिक हो । संतों के समान ही अन्य धार्मिक सम्प्रदायों के भी भेदोपभेद हैं, और प्राय: सभी का प्रतिनिधित्व गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा में मिल जाता है । आशय यह कि धार्मिक दृष्टि से भी गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा प्राय: सभी प्रमुख धार्मिक सम्प्रदायों के प्रतिनिधित्व के दृष्टिगोचर होने के कारण सर्वजनीन कही जा सकती । यहां यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि लगभग चालीस कवि ऐसे भी हैं जिन्हें विशेष जानकारी न मिलने के कारण किसी भी कोटि में नहीं रखा जा सका है परन्तु उनकी रचनाएं प्रधानत: धार्मिक है । कवियों की धार्मिक मान्यताओं के विषय में पूर्णत: प्रामाणिक सामग्री नहीं मिल पायी है , अत: उस विषय में विस्तार से कुछ नहीं कहा जा सकता । परन्तु इतना निश्चित है कि गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के विकास में गुजरात के सभी धार्मिक सम्प्रदायों का महत्वपूर्ण योगदान है, जिससे उसकी व्यापकता तथा लोकप्रियता निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाती है ।

३।२ गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की समृद्धि

जिस प्रकार गुजरात के हिन्दी साहित्य के लेखकों के समय, प्रदेश, जाति, वर्ग, धर्म आदि के आधारों पर गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की व्यापकता तथा लोकप्रियता का परिशीलन किया गया है उसी प्रकार गुजरात में लिखे गये हिन्दी साहित्य के आधार पर उस की समृद्धि का परिचय प्राप्त किया जा सकता है । अबतक की शोधों के आधार पर जो गुजरात के हिन्दी लेखकों द्वारा लिखा गया हिन्दी साहित्य प्रकाश में आया है, उसे निम्नलिखित तीन कोटियों में बांटा जा सकता है :

(१) ऐसा साहित्य जिसके रचयिता ज्ञात हैं ।
(२) ऐसा साहित्य जिसके रचयिता अज्ञात हैं ।[१]

१- देखिए परिशिष्ट तृतीय - ब ।

(३) ऐसी स्फुट रचनाएं जो विभिन्न काव्य संग्रहों में संग्रहीत हैं।[१]

गुजरात में लिखा गया अधिकांश हिन्दी साहित्य यद्यपि अभी तक हस्तलिखित रूप में ही गुजरात राजस्थान आदि स्थानों के अनेक निजी तथा सार्वजनिक संग्रह स्थानों में उपलब्ध हो सकता है तथापि अनेक हिन्दी ग्रन्थ गुजरात में प्रकाशित हो चुके हैं। अनवर मियां कृत समस्त रचना अनवर काव्य, त्रीकमदास कृत समस्त रचना, दलपतराम कृत श्रवणाख्यान, पुरुषोत्तम चरित्र, अखा की समस्त रचनाएं, महेराण सिंह कृत प्रवीण सागर, ईसरदास बारोट कृत हरिरस, नाथूराम सुन्दर जी कृत तख्त यश त्रिवेणिका, पाता भाई कृत जसो विलास, किशनदास जैन कृत किशन बावनी आदि अनेक प्राचीन कवियों की प्राचीन रचनाओं के साथ साथ अनेक आधुनिक लेखकों जैसे दयानंद सरस्वती, पंडित सुखलाल जी, इन्द्र बसावड़ा आदि की रचनाएं भी प्रकाशित हो चुकी हैं। परन्तु गुजरात में लिखे गये समस्त उपलब्ध साहित्य का सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत अध्याय की परिसीमा में असम्भव ही है। अत: उसको विषय, काव्य रूप, भाषा आदि के आधार पर ही उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जायेगा, भाव पक्ष कला पक्ष आदि की दृष्टियों से उसका आलोचनात्मक अध्ययन नहीं किया जायेगा। क्योंकि प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन का प्रयोजन गुजरात के हिन्दी साहित्य की साहित्यिक समीक्षा न होकर, गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का परिचय प्राप्त करना ही है। अत: सम्प्रति हमारे लिए ज्ञातव्य केवल इतना ही है कि गुजरात में हिन्दी की काव्य परम्परा अत्यन्त प्राचीन समय से आज तक अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है, जो हिन्दी को ऐतिहासिक दृष्टि से भारत की राष्ट्र भाषा तो सिद्ध करती ही है, साथ ही वह भारत के अन्य अहिन्दी भाषी प्रान्तों की तुलना में विशेष रूप से समृद्ध है।

गुजरात में लिखे गये हिन्दी साहित्य को मूलत: दो भागों में विभक्त किया जा सकता है - १. गद्य-साहित्य, २. पद्य साहित्य। यद्यपि भारतीय साहित्य

१- देखिए परिशिष्ट तृतीय - अ ।

में वैदिक काल से ही गद्य साहित्य मिलने लगता है, परन्तु पद्य साहित्य की अपेक्षा उसकी परम्परा सामान्यत: सभी प्राचीन भारतीय भाषाओं में तथा अर्वाचीन भाषाओं में भी आधुनिक काल से पूर्व अधिक समृद्ध नहीं हैं। गुजरात में भी हिन्दी गद्य साहित्य पद्य साहित्य की अपेक्षा अत्यंत स्वल्प ही कहा जा सकता है। प्राचीन काल में गुजरात के हिन्दी साहित्य में हिन्दी गद्य का प्रयोग टीका टिप्पणियों तथा वचनिका आदि तक ही सीमित था। भुज की ब्रजभाषा पाठशाला के प्रथम आचार्य जैन कवि कनक कुशल तथा कुंवर कुशल के कुछ ग्रन्थों में गद्य का प्रयोग मिलता है। इसी प्रकार जूनागढ़ के संगीताचार्य श्री आदित्यराम के संगीतादित्य ग्रंथ में गद्य का स्फुट प्रयोग मिलता है। आधुनिक काल के कवियों में श्री गोविन्द गिल्ला भाई ने अपने शास्त्रीय ग्रंथों तथा अपने कुछ प्रकाशित ग्रंथों की भूमिकाओं में गद्य का प्रयोग किया है। हिन्दी भाषी प्रदेशों में सुज्ञात आधुनिक हिन्दी के आद्य गद्य-लेखक श्री लल्लूलाल जी तथा श्री दयानन्द सरस्वती गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के परिपाक ही हैं, यद्यपि उनका प्रधान कार्य क्षेत्र हिन्दी भाषी क्षेत्र ही रहा है। श्री इन्द्र बसावड़ा ने प्रेमचन्द के अनुसरण पर गुजरात में 'घर की राह' नामक उपन्यास लिख कर तथा पंडित सुखलाल जी ने अनेक शोधपूर्ण तथा दार्शनिक ग्रंथ लिख कर आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य को गुजरात में समृद्ध किया है। और भविष्य में हिन्दी के गद्य साहित्य को गुजरात में विशेष रूप से विकसित होने के लक्षण भी दृष्टिगोचर हो रहे हैं। परन्तु पद्य की तुलना में अब तक गद्य साहित्य गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का विशेष पुष्ट पक्ष नहीं कहा जा सकता।

हिन्दी भाषी प्रदेश के हिन्दी साहित्य के समान ही गुजरात के हिन्दी साहित्य को मूलत: दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है। १ काव्य साहित्य २ शास्त्रीय साहित्य। गुजरात के हिन्दी काव्य साहित्य में काव्य साहित्य के दोनों रूप, मुक्तक काव्य, प्रबंध काव्य उपलब्ध होते हैं, परन्तु मुक्तकों की अपेक्षा प्रबन्ध काव्यों की परम्परा गुजरात में हिन्दी की सामान्य प्रबन्ध काव्य परम्परा

से कुछ भिन्न प्रकार से विकसित हुई है । स्फुट पद भजन तथा अन्य कवित्त आदि छंदों में मुक्तकों की रचना करने वाले कवियों की संख्या ९९ है,[१] जिन्होंने अपनी रचनाओं को किसी प्रबन्ध सूत्र के अनुसार किसी प्रकार का रूप प्रदान नहीं किया है वरन् वे स्फुट संग्रहों के रूप में ही उपलब्ध होती है । अन्य अनेक कवियों ने अपने छंदों को संख्या, वर्णमाला, या विषय के आधार पर विषयमूलक, संख्या मूलक आदि मुक्तक-प्रबन्धों का रूप प्रदान कर दिया है । अनेक संख्यामूलक मुक्तक प्रबन्ध जैसे चौढालिया चौबीसी, पच्चीसी, बत्तीसी, पंचाशिका, बावनी, शतक आदि गुजरात में विशेष रूप से मिलते हैं । सतसई केवल दयाराम की ही सुप्रसिद्ध है, परन्तु बावनी यहां न केवल अधिक लिखी गयी हैं, वरन् उनका प्रचार भी अधिक रहा है । अनेक कवियों ने एकाधिक बावनियां लिखी हैं । भुज के एक मंत्री श्री मणिभाई जसभाई ने बावनी लिखने वालों के लिए एक विशेष पुरस्कार प्रचलित किया था[२] । आशय यह कि गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा काव्य रूपों की दृष्टि से पर्याप्त समृद्ध कही जा सकती है । कथानक की एक सूत्रता से आबद्ध अनेक प्रबन्ध काव्य मिलते हैं जिन्हें खंडकाव्य तथा महाकाव्य की कोटियों में समाविष्ट किया जा सकता है । हिन्दी साहित्य में जैसे हमें अनेक लीला काव्य मिलते हैं उसी प्रकार गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा में भी अनेक लीला काव्य मिलते हैं । त्रीकमदास कृत डाकोर लीला में कृष्ण की स्थानीय लीला का सुन्दर वर्णन मिलता है उसी प्रकार गोप आदि अनेक कवियों ने रुक्मिणी हरण के प्रसंग पर सुन्दर खण्ड काव्य लिखे हैं । इसी प्रकार कुछ कवियों ने वेलि और रास काव्य भी लिखे हैं । कुछ मुसलमान कवियों ने यूसुफ जुलेखा जैसी मसनवी प्रबन्ध रचना लिखी हैं । वृहद् काव्य, जिन्हें महाकाव्य सम कहा जा सकता है, गुजरात के कई कवियों ने लिखे हैं जैसे श्री राजकवि मूलदास मोन दास कृत वीरायण, दलपतराम कृत सत्पुरुष चरित्र तथा महेरामणसिंह कृत प्रवीण सागर आदि । साराश यह कि गुजरात में

१- देखिए - परिशिष्ट द्वितीय - अ ।

२- भुज (काव्य) की ब्रजभाषा पाठशाला - कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह, पृ० ५१ ।

रूप और रस दोनों दृष्टियों से विपुल वैविध्य पूर्ण काव्य साहित्य मिलता है, जिसे गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा की समृद्धि का प्रत्यक्ष प्रमाण कहा जा सकता है ।

आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिन्दी कदाचित् अकेली भाषा है, जिसमें मध्यकाल से ही शास्त्रीय साहित्य के लेखन की परम्परा मिलने लगती है तथा गुजरात कदाचित् अकेला अहिन्दी भाषी प्रान्त है, जहां हिन्दी भाषी प्रान्तों के समान हिन्दी की शास्त्रीय साहित्य और शास्त्रीय काव्य की परम्परा मिलती है । आशय यह कि प्राय: सभी अहिन्दी भाषी प्रान्तों में हिन्दी की काव्य परम्परा मिलती है परन्तु मुख्य रूप से वह धार्मिक प्रयोजन प्रेरित ही है । अत: अधिकांश साहित्य धार्मिक है । परन्तु रीतिकाल से हिन्दी में धार्मिक साहित्य के साथ साथ शास्त्रीय काव्य तथा साहित्य हिन्दी भाषी प्रान्तों में लिखा जाने लगता है । गुजराती में यद्यपि इस प्रकार का साहित्य उस समय नहीं मिलता परन्तु गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के अन्तर्गत इस प्रकार का साहित्य विशेष रूप से मिलने लगता है । काव्य शास्त्र के साथ अनेक ग्रंथ, संगीत, नृत्य, वाद्य, राजनीतिक, ज्योतिष इतिहास, व्याकरण, पुराण, छंदशास्त्र, कोष, ऋतु विज्ञान, वैद्यक, सामुद्रिक, दर्शन, धर्म, नीति, आदि विषयों पर शास्त्रीय ग्रंथ गुजरात के अनेक कवियों ने लिखे हैं ।[१] रीतिकाल में जैसे शुद्ध शास्त्रीय काव्य हिन्दी भाषी प्रदेशों में विशेष रूप से लिखा गया है, उसी प्रकार गुजरात में भी हिन्दी में शुद्ध शास्त्रीय साहित्य विशेष रूप से लिखा गया है । हमारे आलोच्य कवि आचार्य कवि गोविन्द गिल्ला भाई इसी परम्परा में आते हैं, इसलिए इस परम्परा का विशेष अध्ययन अगले अध्याय में किया जायेगा । यहां केवल यही ज्ञातव्य है कि गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा अनेक दृष्टियों से समृद्ध है । इसी प्रकार भाषा, शैली, भावाभिव्यंजना आदि अनेकानेक साहित्यिक दृष्टियों से भी गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का

१- देखिए परिशिष्ट द्वितीय - अ ।

अध्ययन किया जा सकता है । परन्तु प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन की मुल स्थापना कि "अन्य अहिन्दी भाषी प्रान्तों की तुलना में गुजरात को हिन्दी काव्य परम्परा अत्यधिक समृद्ध काव्य परम्परा है," प्रस्तुत विवेचन से सिद्ध हो जाती है , साथ ही गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा के वैशिष्ट्य निरूपण के लिए अपेक्षित भुमिका भी तैयार हो जाती है ।

४। वैशिष्ट्य निरूपण

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा अनेक दृष्टियों से विशिष्ट है । अर्थात् जैसे अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी साहित्य की परम्पराएं अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की तुलना में हिन्दी का वैशिष्ट्य सिद्ध करती हैं, उसी प्रकार उपरोक्त विवेचन से यह सिद्ध हो जाता है कि अन्य अहिन्दी भाषी प्रान्तों की तुलना में गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा अपनी व्यापकता, लोकप्रियता, रूप एवं रस के वैविध्य तथा विस्तार आदि की दृष्टियों से विशिष्ट है । परिमाणाधिक्य के साथ साथ गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का गुणाधिक्य भी गुजरात के हिन्दी कवियों की कृतियों के विश्लेषणात्मक विवेचन से स्वत: व्यंजित हो जाता है । अत: यह कहा जा सकता है कि गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा अनेक विशिष्टताओं के कारण, अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व विकसित कर सकी है, जो अन्य अहिन्दी भाषी प्रान्तों की हिन्दी काव्य परम्पराओं तथा हिन्दी भाषी प्रदेश की हिन्दी काव्य परम्परा से भी भिन्न है । आशय यह कि गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा, गुजरात की गुजराती काव्य परम्परा, अहिन्दी भाषी प्रदेशों की हिन्दी काव्य परम्परा तथा हिन्दी भाषी प्रदेशों की हिन्दी काव्य परम्पराओं से भिन्न अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व विकसित कर सकी है । वस्तुत: गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का वैशिष्ट्य उसका उक्त स्वतंत्र व्यक्तित्व ही

है, जिसकी व्याख्या में ही गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का वैशिष्ट्य निरूपण सम्पूर्ण कहा जा सकता है ।

५। उपसंहार

प्रथम अध्याय के अनुक्रम में प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि [redacted] ऐतिहासिक भारतीय राष्ट्र की ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक राष्ट्रभाषा हिन्दी है, जिसके साहित्य की अखिल भारतीय परम्परा में गुजरात की हिन्दी काव्य परम्परा का विशेष स्थान है तथा उसके राष्ट्रीय महत्त्व के साथ साथ उसका शुद्ध साहित्यिक महत्त्व एवं मूल्य है ।